15-11-2018

प्रेस विज्ञप्ति

आज दिनांक 15 नवंबर 2018 को वर्ल्ड प्रीमेच्योर बेबी डे (17 नवंबर) के अवसर पर दुनिया के नंबर 1 डायपर ब्रांड पैम्पर्स ने भारत में प्रीमेच्योर शिशुओं के बेहतर सेहत के लिए अपना योगदान देने का फ़ैसला किया है. इसके तहत पैम्पर्स ने प्रीमेच्योर शिशुओं की नाज़ुक त्वचा के मद्देनज़र ख़ासतौर से डिज़ाइन किये गये दुनिया के सबसे छोटे डायपर्स को लॉन्च किया. पैम्पर्स ने देशभर के बड़े सरकारी अस्पतालों को ऐसे कमज़ोर बच्चों की बेहतर देखभाल और उनकी सहायता के लिए एक लाख डायपर्स निशुल्क प्रदान किये हैं. जिसके अंतगर्त पैम्पर्स ने 12,000 डायपर्स किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के एन0आई0सी0यू0 वार्ड को सौंपे। यह जानकारी आज ट्रॉमा सेंटर में आयोजित एक पत्रकार वार्ता में दी गई।

किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (के0जी0एम0यू0) में पेडियाट्रिक और एनआईसीयू वार्ड की हेड डॉक्टर माला कुमार ने पत्रकारों से बातचीत में बताया कि, "किंग जॉर्ज मेडिकल अस्पताल में हर महीने जन्म लेनेवाले 700-800 शिशुओं में से 25 फीसदी शिशु प्रीमेच्योर होते हैं, जिन्हें संक्रमण का अधिक ख़तरा रहता है. समय से पूर्व जन्म लेनेवाले शिशुओं की पसलियां पतली होती हैं. ऐसे में बड़े डायपर्स प्रीमेच्योर बच्चों के नन्हें पैरों को सही दिशा में घूमने नहीं देते और और हिप को सही तरीके से आराम नहीं पहुंचा पाते हैं. भले ही इन शिशुओं का जन्म समय से पहले हो जाता हो, मगर ये काफ़ी एक्टिव होते हैं. हमें इस बात की ख़ुशी है कि पैम्पर्स जैसी कंपनी ने इन ज़रूरतों को समझते हुए ऐसे ख़ास डायपर्स को डिज़ाइन किया है. इस प्रेसवार्ता में मुख्य चिकित्सा अधीक्षक प्रोफेसर एस0एन0शंखवार, एसोसिएट प्रोफेसर डॉ0 शालिनी त्रिपाठी एवं रेस्पेरेट्री विभाग के डॉ0 संतोष कुमार मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

गौरतलब है कि भारत में प्रीमेच्योर बच्चों की अच्छी देखभाल के लिए पैम्पर्स में देश के चार शहरों के कई बड़े सरकारी अस्पतालों के साथ एक ख़ास पार्टनरशिप की है और प्रीमेच्योर शिशुओं के लिए ख़ासतौर पर बनाये गये डायपर्स को दान स्वरूप दिया है. बता दें कि इन अस्पतालों में देश के सबसे बड़े एनआईसीयू यूनिट मौजूद हैं, जिनमें मुम्बई के किंग एडवर्ड मेमोरियल अस्पताल (केईएम), सायन अस्पताल और नायर अस्पताल शामिल हैं. इसके अलावा, दिल्ली का सफ़दरजंग अस्पताल, लखनऊ का किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (के0जी0एम0यू0) का भी नाम शुमार है.

ग़ौरतलब है कि भारत दुनिया का एक ऐसा देश है,जहां पर सबसे ज़्यादा प्रीमेच्योर बच्चे जन्म लेते हैं (हर साल तकरीबन 35 लाख बच्चे). बेहतर होते चिकित्सीय सुविधाओं के चलते ऐसे बच्चों के बचने की संभावनाएं बढ़ती जा रही है और विपरीत परिस्थितियों में भी शिशुओं के बचने की दर में ख़ासा सुधार हुआ है. ख़ासतौर पर बनाये गये डायपर्स के अभाव में आज भी देशभर के ज़्यादातर अस्पतालों में आम बच्चों के लिए उपलब्ध डायपर्स को काटकर छोटा किया जाता है और फिर उन्हें समय से पहले जन्म लेनेवाले शिशुओं को पहनाया जाता है.

पैम्पर्स के एक प्रवक्ता ने इस संबंध में कहा, "पैम्पर्स हर शिशु के सही देखभाल और उसके योग्य विकास के लिए प्रतिबद्ध है. विश्व में भारत एक ऐसा देश है, जहां सबसे ज्यादा तादाद में प्रीमेच्योर

शिशुओं का जन्म होता है. ऐसे में हम इस बात को सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत हैं कि जन्म लेने के बाद ऐसे तमाम शिशुओं की उचित देखभाल हो. प्रीमेच्योर शिशुओं की त्वचा बेहद नाज़ुक होती है, जिसे थोड़े वक्त के लिए भी गीला छोड़ने पर इसके संक्रमण का शिकार होने का ख़तरा बना रहता है. ऐसे में एनआईसीयू की नर्सों के साथ मिलकर किये गये विशेष प्रयास के तहत पैम्पर्स ने इस नन्हें योद्धाओं के लिए विशेष डायपर्स का निर्माण किया है. ये डायपर्स अब तक के सबसे छोटे डायपर्स हैं, जो 800 ग्राम वज़नी शिशुओं के लिए भी काफ़ी आरामदायक हैं."

सेलेब्रिटी मदर सोहा अली खान अपने सोशल मीडिया पेज के तहत #PampersForPreemies नाम से इस पहल को काफ़ी सपोर्ट कर रही हैं. उन्होंने कहा, "अभिभावकों के लिए शिशु के जन्म से बड़ी और कोई ख़ुशी नहीं हो सकती है. मगर जब आपका शिशु वक्त से पहले ही पैदा हो जाता है, तो ऐसे में आपका चिंतित होना लाज़िमी है. प्रीमेच्योर शिशुओं की त्वचा बेहद नाज़ुक होने की वजह से इसके जल्द संक्रमण का शिकार होने का ख़तरा होता है. ऐसे में हर हाल में उनकी बेहतर देखभाल प्राथमिकता बन जाती है. अगर ऐसे शिशुओं का अच्छे से ख़्याल रखा जायेगा, तो वो जल्द से जल्द स्वस्थ होंगे. एक मां होने के नाते मैं इस बात को अच्छी तरह से समझ सकती हूं कि जब आपके बच्चे कि तबीयत ख़राब होती है, तो आप पर क्या कुछ गुज़रती है. जब मेरी बेटी इनाया का जन्म हुआ था, तो वो काफ़ी स्वस्थ थी, मगर हमने इस बात का ख़ासा ख़्याल रखा था कि हम उसके लिए बेहतरीन उत्पादों का ही इस्तेमाल करें. यही वजह है कि प्रीमेच्योर शिशुओं के मामले में अभिभावक और अस्पताल काफ़ी सावधानी बरतते हैं. ऐसे में मेरे लिए ये बेहद ख़ुशी की बात है कि

#PampersForPreemies जैसी अनोखी पहल के तहत पैम्पर्स ने तमाम प्रमुख अस्पतालों के साथ एक अच्छी पार्टनरशिप की है और देशभर के उन अस्पतालों में जन्म लेनेवाले प्रीमेच्योर शिशुओं के लिए ख़ासतौर से तैयार किये गये डायपर्स मुफ़्त में प्रदान करने का निर्णय लिया है. ऐसी हालत में पैदा होनेवाले बच्चों को अधिक देखभाल और प्यार की ज़रूरत होती है. एक मां होने के नाते मेरे लिए ये जानना बेहद संतोषजनक है कि इनकुबेटर में रहते हुए और नलियों के सहारे जीवित शिशु के लिए कोई राहत भरी पहल की गयी है."

पैम्पर्स के प्रीमीज़ डायपर के फ़ायदे :

इन्हें प्रीमेच्योर शिशुओं की नाज़ुक त्वचा के हिसाब से डिज़ाइन किया गया है. यही है वजह है कि ये डायपर्स ऐसे शिशुओं की त्वचा को मुलायमपन का अनोखा एहसास कराते हैं और उनके पैरों को बेहतर ढंग से मूव करने में मदद करते हैं.

एनआईयूसी नर्सों के साझा प्रयासों के तहत डिज़ाइन किये गये ये डायपर्स शिशुओं के आराम और बेहतर चिकित्सीय सुविधाओं के मद्देनज़र बनाये गये हैं.

इससे शिशुओं का मल-मूत्र क़ाबू में रहता है, जिससे संक्रमण होने का ख़तरा कम हो जाता है. इसके अलावा, ये डायपर्स प्रीमेच्योर शिशुओं के ट्यूब से उनके तरल पदार्थों को दूर रखता है.

ये शिशुओं के लिए काफ़ी आरामदायक है, जो उन्हें बेहतर नींद में मददगार साबित होता है. इससे उनके तेज़ी से बढ़ने और रिकवर होने में ख़ासी मदद मिलती है.

Pampers® के बारे में :

50 साल से भी अधिक समय से अभिभावक अपने शिशुओं की अच्छी देखभाल के लिए पैम्पर्स पर भरोसा करते आये हैं. पैम्पर्स प्रोक्टर ऐंड गैम्बल कंपनी का हिस्सा है और दुनियाभर में ये सर्वाधिक डायपर बेचनेवाली कंपनी है. प्रतिदिन दुनिया के 100 देशों में 25 मिलियन (ढाई करोड़) से भी अधिक बच्चे पैम्पर्स ब्रांड के डायपर पहनते हैं. पैम्पर्स डायपर्स, वाइप्स और ट्रेनिंग पैंट्स की कम्प्लीट रेंज ऑफ़र करती है, जो हर स्टेज पर शिशु के विकास को और सुविधाजनक बनाती है. कृपया www.in.pampers.com पर जाकर पैम्पर्स के तमाम प्रोडक्ट्स के बारे में और जानकारी हासिल करें और अपने शिशु की उचित देखभाल और उसके विकास में मदद करें.